

पाठ- नेता जी का चरमा

लेखक: स्वयं प्रकाश

मुख्य पात्र

१. हलद्वार साहब : एक भावुक देशभक्त हैं।
मास्टर मोतीलाल द्वारा बनाई मूर्ति
की सराहना करते हैं।
२. कैप्टन : बूढ़ा अपाहिज चश्मे बेचने
वाला व्यक्ति हैं। देशभक्तों का
सम्मान करने वाला एक सच्चा देश-
भक्त हैं।
३. पान वाला : एक खुशमिजाज व्यक्ति
हैं। किसी भी अच्छे कार्य
का मूल्यांकन करने की योग्यता व
क्षमता उसमें नहीं हैं।
४. मूर्तिकार : मूर्तिकार मोती लाल
स्कूल के चित्रकला के
अध्यापक हैं। अपने दिए गए कार्य को
समय व ईमानदारी से करने में सक्षम हैं।

कहानी का सारांश -

- * देश के निर्माण में कई अपरिचित लोगों की देशभक्ति और उनका छोटे से छोटे योगदान कितना महत्वपूर्ण होता है, इस सचचाई को इस कहानी के माध्यम से उजागर किया गया है।
- * कहानी एक कस्बे की है जिसमें हालदार साहब प्रत्येक पंद्रह दिन के बाद काम से आया करते हैं।
- * कस्बे के मुख्य बाजार के मुख्य चौराहे पर नगरपालिका के प्रशासनिक अधिकारी द्वारा नेता जी सुभाषचंद्र बोस की एक संगमरमर की प्रतिमा लगवाना।
- * मूर्ति को देखकर ऐसा लगता था कि अच्छे मूर्तिकार का अभाव होने व अधिक बजट न होने के कारण इकलौते ड्राइंग मास्टर मोतीलाल को यह काम सौंप दिया गया होगा।

* फौजी वर्क पहने हुए लगभग दो फुट की मूर्ति मोती लाल जी द्वारा बनाना एक सराहनीय प्रयास समझा गया।

* उस मूर्ति में एक कसर या कमी थी जो देखते ही खटकती थी वह थी कि नेता जी आँखों पर चश्मा नहीं था। इसलिए मूर्ति को सचमुच का एक छोड़े फ्रेम का चश्मा पहना दिया गया था।

* हालदार साहब जब भी चौराहे पर रुककर पान खाते और मूर्ति को ध्यान से देखते तो हैरान हो जाते कि हर बार मूर्ति पर लगा चश्मा बदल जाता है।

* पुछने पर पानवाले ने बताया कि कैप्टन नाम का एक चश्मा बेचने वाला एक व्यक्ति है वह चश्मा बदलता है। हालदार साहब ने पूछा कि, 'क्या वह फौजी है?' या कोई नेता जी का साथी? क्योंकि उसको सब कैप्टन कहकर बुलाते हैं।

* इस प्रश्न पर पान वाले द्वारा उस कैप्टन के लिए यह बोलना कि वह तो एक बूढ़ा, अपाहिज सिपाही है वो क्या जाएगा फौज में हालदार साहब को इस तरह कैप्टन का पान वाले द्वारा भेजा कि बनाना पसंद नहीं आया।

* कुछ समय बाद हालदार साहब का फिर उस चौराहे पर रुकना व मूर्ति की तरफ देखकर हैरान रह जाना। कारण जानने पर पता चलना कि कैप्टन चश्मे वाले कि मृत्यु हो गई इसलिए उस दिन मूर्ति पर चश्मा नहीं था।

* हालदार साहब का दुखी होकर वहाँ से चले जाना और यह सोचना कि कैप्टन चला गया तो मूर्ति पर चश्मा लगाने का काला भी अब कोई नहीं रहा।

५ अंत में पंद्रह दिन बाद फिर से
हालदार साहब का कस्बे से
गुजरना और मूर्ति देखकर आश्चर्य
व खुशी के भाव से गाड़ी को
रोकना और मूर्ति के पास जाकर
अंतिम की मुद्रा में खड़े हो जाना
क्योंकि मूर्ति की आँखों पर एक
शरकंडे का चश्मा रखा होना जैसे
किसी बच्चे ने बनाया हो। यह देखकर
हालदार साहब की आँखों का
भर आना।

RTC - 9.

"केवल एक चीज की कमी थी, - - - - - गया था।"

- (क) चश्मा लगाने वाले का परिचय दीजिए।
- (ख) हालदार साहब ने उसके चश्मा लगाने पर क्या सोचा?
- (ग) हालदार साहब की दृष्टि में लैप्टन का दर्जा क्या था और क्यों?
- (घ) 'सामान्य चश्मा' से आप क्या समझते हैं? हालदार साहब को किस बात पर आश्चर्य होता था?

पाठ का उद्देश्य :

प्रस्तुत कहानी के द्वारा लेखक यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि भारत देश में प्रत्येक व्यक्ति के मन में अपने देश के लिए देश-भक्ति की भावना होनी चाहिए।

समाज में ऐसा देखा गया है कि सभी लोग अपने सामर्थ्य के हिसाब से देश के निर्माण में अपना योगदान देते हैं। हम किसी के छोटे से छोटे योगदान का मज़ाक नहीं उड़ाना चाहिए।

देश के निर्माण में अनगिनत, अपरिचित लोगों की देशभक्ति और उनका किया गया योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमें देशभक्ति का जुनून रखने वालों का सम्मान करना चाहिए। हम सभी का सामूहिक योगदान ही देश का निर्माण करता है यही बताना लेखक का उद्देश्य है।